ग्रुप कैप्टन सर्वेश जी

मेजर जनरल नीलेन्द्र कुमार

हाल में सर्वेश जी के निधन से अपने समाज और विशेषकर दिल्ली समुदाय की एक कर्मठ, विचारशील और प्रगति प्रेरक हस्ती नहीं रही।

वह लखनऊ के एक प्रतिष्ठित परिवार में जन्मे एवं उच्च शिक्षा के बाद वायुसेना में अधिकारी के रूप में कमीशन प्राप्त कर अपना कैरियर प्रारम्भ किया। विभिन्न एयर फोर्स स्टेशन पर कार्यरत रहते हुए अपनी कार्यकुशलता और सूझबूझ से उन्होंने अपनी धाक जमा ली। वह अकसर कहते थे कि वायुसेना मुख्यालय ने उनकी पहली पोस्टिंग की थी। उसके बाद अपनी इच्छानुसार जहॉ चाहा उन्होंने अपना तबादला करवाया। फौजी जीवन के उनके साथियों से उनके जीवनपर्यन्त घनिष्ठ सम्बन्ध कायम रहे। समाज बान्धवों से उनकी नजदीकी तथा जाति प्रेम के कई उदाहरण हैं। वह एयरफोर्स में कार्यकाल के दौरान प्रायः हर स्टेशन पर स्थानीय चतुर्वेदियों की नियमित बैठक व गोष्ठियॉकरवाने के लिए अब भी याद किये जाते हैं।

वायुसेना में ग्रुप कैप्टन के रैंक में अपनी इच्छा से अवकाश ग्रहण करने के बाद उन्होंने कारपोरेट क्षेत्रा में अपना विशिष्ट स्थान स्थापित किया। विभिन्न एयर लाइन तथा अन्य कम्पनियों में एकाउन्ट तथा जन संसाधन विभागों में उच्च स्थानों पर उनकी नियुक्ति उनके प्रायोगिक अनुभव और योग्यता का परिचायक थी।

दिल्ली में नोएडा में अपना घर लेने के बाद उन्होंने स्थानीय समाज की ओर विशेष ध्यान दिया। संगठित रूप में समाज के विभिन्न कार्य–कलापों में वह यथा सम्भव पूरी सहायता देते थे। धार्मिक और पर्यटक स्थानों के लिए बस द्वारा यात्राा का प्रायोजन उनकी दूरदर्शिता और संगठन शक्ति का समन्वय था। बड़ी तादात में विभिन्न आयु वर्ग के लागों को ले जाना तथा उनकी सुविधा तथा उनकी सुविधा व पसन्दगी का ध्यान रखते हुए यात्राा के सफल प्रबन्ध से उनके सब सहयोगियों में वह प्रशंसा के पात्रा बन गए थे।

समाज की प्रगति के उद्देश्य से वह छात्राों तथा युवा वर्ग को आगे बढ़वाने के लिए सदा तत्पर रहते थे। विभिन्न विषयों के विशेषज्ञों को आमंत्रित करके साक्षात्कार तथा वार्तालाप द्वारा दो पीढ़ियों को नजदीक लाकर एकजुट करने की उनकी योजना सराहना योग्य थी। इसी प्रकार विवाह योग्य नवयुवकों तथा लड़कियों को परस्पर मिलने का अवसर देने के लिए परिचय सम्मेलन की परम्परा कायम करने का उनका प्रयोग एक कारगर जवाब के रूप में सामने आया। इन विषयों में उनके विचार प्रायोगिक होते थे। अन्य लागों से सलाह लेते समय और विकल्पों को ध्यान में रखने के लिए वह तैयार रहते थे।

मिलन सारिता, शालीनता तथा आधुनिकता के मूर्तिमान स्वरूप सर्वेश जी का व्यक्तित्व तथा योगदान उनके परिवार जनों, सहयोगियों और सम्बन्धियों में ही नहीं, वरन् समाज के इतिहास में भी अमिट रहेगा।